

बदलती पारिवारिक संरचनाओं का बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव

डॉ. मनोज कुमार सकलानी

सहायक प्राध्यापक

माँ पूर्णागिरि कॉलेज ऑफ एजुकेशन,

नाद बोरा, डाकघर – चम्पावत,

चम्पावत, उत्तराखंड- 262523

ORCID id www.orcid.org/0009-0005-3962-0893

सारांश : भारतीय समाज में नगरीकरण, प्रवासन, रोजगारगत गतिशीलता, वैवाहिक परिवर्तन तथा सामाजिक आधुनिकीकरण के कारण पारिवारिक संरचनाओं में उल्लेखनीय परिवर्तन हो रहे हैं। संयुक्त परिवारों के साथ-साथ एकल, एक-अभिभावकीय तथा पुनर्गठित परिवारों की उपस्थिति बढ़ने से बच्चों के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुभवों में भी विविधता उत्पन्न हुई है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बदलती पारिवारिक संरचनाओं, पारिवारिक अस्थिरता, अनुभूत पारिवारिक सहयोग, भावनात्मक तनाव तथा शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता के संदर्भ में बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषण करना था। अध्ययन में कक्षा छह से दस तक के 360 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। नमूने में संयुक्त, एकल, एक-अभिभावकीय तथा पुनर्गठित परिवारों के विद्यार्थी शामिल थे। अध्ययन में पारिवारिक वातावरण एवं संक्रमण प्रभावित, भावनात्मक तनाव मापनी, शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता मापनी तथा 100 अंकों का शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण प्रयुक्त किया गया। परिणामों में पारिवारिक सहयोग का शैक्षिक उपलब्धि से सकारात्मक संबंध ($r = .47, p < .001$), शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता का सकारात्मक संबंध ($r = .52, p < .001$) तथा भावनात्मक तनाव का नकारात्मक संबंध ($r = -.41, p < .001$) पाया गया। पारिवारिक अस्थिरता भी उपलब्धि से नकारात्मक रूप से संबंधित थी ($r = -.36, p < .001$)। बहु-प्रतिगमन विश्लेषण ने उपलब्धि में 42 प्रतिशत विचरण की व्याख्या की। निष्कर्ष संकेत करते हैं कि परिवार का केवल संरचनात्मक स्वरूप नहीं, बल्कि उसकी स्थिरता, सहयोग, संवाद, आर्थिक-सामाजिक संसाधन तथा बच्चे की मनोवैज्ञानिक सुरक्षा शैक्षिक परिणामों के लिए अधिक महत्वपूर्ण हैं।

मुख्य शब्द: पारिवारिक संरचना, शैक्षिक उपलब्धि, भावनात्मक तनाव, पारिवारिक सहयोग, आत्म-प्रभावकारिता, पारिवारिक अस्थिरता

परिचय

परिवार बाल विकास की सबसे प्रारंभिक और प्रभावशाली सामाजिक संस्था है। बच्चे की भाषा, भावनात्मक सुरक्षा, सामाजिक व्यवहार, अध्ययन अनुशासन, उपलब्धि-प्रेरणा तथा स्वयं के प्रति धारणा का विकास बड़े स्तर पर पारिवारिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से होता है। विद्यालय औपचारिक शिक्षा प्रदान करता है, किंतु परिवार वह आधार निर्मित करता है जिसके साथ बच्चा विद्यालयी अनुभवों में प्रवेश करता है।

भारत में पारिवारिक संरचना ऐतिहासिक रूप से संयुक्त एवं विस्तारित पारिवारिक व्यवस्था से जुड़ी रही है। हालांकि औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, शिक्षा, रोजगार के लिए प्रवासन तथा बदलती वैवाहिक प्रवृत्तियों के साथ एकल परिवारों की संख्या बढ़ी है। Dey और Goli द्वारा 1991-2021 के भारतीय आँकड़ों पर किए गए विश्लेषण में नगरीकरण और आधुनिकीकरण को परिवारों के एकलीकरण से संबंधित पाया गया। हाल के दक्षिण एशियाई विश्लेषण भी भारत में पारिवारिक आकार में कमी और एकल परिवारों की बढ़ती उपस्थिति की पुष्टि करते हैं।

पारिवारिक संरचना में परिवर्तन का अर्थ केवल संयुक्त परिवार से एकल परिवार में परिवर्तन नहीं है। माता-पिता का अलगाव, तलाक, मृत्यु, पुनर्विवाह, एक-अभिभावकीय पालन-पोषण, सौतेले अभिभावक की उपस्थिति, बार-बार स्थानांतरण या देखभालकर्ता में परिवर्तन भी बच्चे के पारिवारिक अनुभव को प्रभावित कर सकते हैं। इस प्रकार परिवार को स्थिर श्रेणियों के बजाय समय के साथ बदलने वाली सामाजिक प्रणाली के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

अंतरराष्ट्रीय साहित्य में माता-पिता के अलगाव और पारिवारिक अस्थिरता को बच्चों के व्यवहार, भावनात्मक अनुकूलन और शैक्षिक उपलब्धि से जोड़ा गया है। Amato और Keith के मेटा-विश्लेषण में तलाकशुदा परिवारों के बच्चों में औसतन शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक परिणाम कम पाए गए, यद्यपि प्रभावों का आकार विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न था। बाद के मेटा-विश्लेषण ने भी शैक्षिक उपलब्धि, आत्म-अवधारणा और मनोवैज्ञानिक समायोजन में औसत अंतर की पुष्टि की।

इन परिणामों को केवल परिवार के प्रकार से समझना पर्याप्त नहीं है। आर्थिक संसाधनों में कमी, माता-पिता का तनाव, पारिवारिक संघर्ष, निगरानी में कमी, विद्यालय परिवर्तन और बच्चे की भावनात्मक असुरक्षा संभावित मध्यस्थ तंत्र हैं। इसलिए वर्तमान अध्ययन पारिवारिक संरचना और शैक्षिक उपलब्धि के बीच मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर विशेष ध्यान देता है।

समस्या का कथन

एक ही विद्यालय, कक्षा और पाठ्यक्रम में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक परिणामों में उल्लेखनीय अंतर दिखाई देता है। बुद्धि, अध्ययन आदतों और विद्यालयी संसाधनों के अतिरिक्त पारिवारिक स्थिरता तथा मनोवैज्ञानिक वातावरण इस अंतर की व्याख्या कर सकते हैं।

एकल परिवार अपने आप में प्रतिकूल नहीं होता और संयुक्त परिवार स्वचालित रूप से लाभकारी नहीं होता। एक छोटे परिवार में उच्च भावनात्मक सहयोग, पर्याप्त संसाधन और नियमित शैक्षिक मार्गदर्शन बच्चे के लिए अत्यंत अनुकूल हो सकता है, जबकि बड़े संयुक्त परिवार में संघर्ष या उपेक्षा नकारात्मक परिणाम उत्पन्न कर सकती है। इसी प्रकार एक-अभिभावकीय परिवार में स्थिर, सहयोगी और संसाधनयुक्त वातावरण कई जोखिमों को कम कर सकता है।

इसलिए अध्ययन का केंद्रीय प्रश्न यह है कि बदलती पारिवारिक संरचनाएँ बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को किस प्रकार प्रभावित करती हैं और इस संबंध में भावनात्मक तनाव, पारिवारिक सहयोग तथा शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता की क्या भूमिका है।

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न पारिवारिक संरचनाओं से आने वाले बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना, पारिवारिक अस्थिरता और उपलब्धि के बीच संबंध का परीक्षण करना, पारिवारिक सहयोग, भावनात्मक तनाव और शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता की भूमिका का विश्लेषण करना तथा यह निर्धारित करना था कि कौन से मनोवैज्ञानिक एवं पारिवारिक कारक शैक्षिक उपलब्धि की सबसे मजबूत भविष्यवाणी करते हैं।



परिकल्पनाएँ

H01: विभिन्न पारिवारिक संरचनाओं से आने वाले बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

H02: पारिवारिक अस्थिरता और बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

H03: पारिवारिक सहयोग, भावनात्मक तनाव और शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक नहीं हैं।

H04: पारिवारिक अस्थिरता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव मनोवैज्ञानिक कारकों से संबंधित नहीं है।

साहित्य समीक्षा

परिवार संरचना और बाल विकास पर प्रारंभिक प्रभावशाली शोध में McLanahan और Sandefur का अध्ययन महत्वपूर्ण है। उन्होंने एक-अभिभावकीय परिवारों में बच्चों के शैक्षिक एवं जीवन-परिणामों का विश्लेषण करते हुए आर्थिक संसाधन तथा अभिभावकीय निगरानी को महत्वपूर्ण व्याख्यात्मक कारकों के रूप में पहचाना। इससे स्पष्ट हुआ कि पारिवारिक संरचना का प्रभाव प्रत्यक्ष होने के बजाय उपलब्ध संसाधनों और दैनिक पारिवारिक प्रक्रियाओं के माध्यम से भी कार्य करता है।

Amato और Keith ने 92 अध्ययनों के मेटा-विश्लेषण में माता-पिता के तलाक से प्रभावित बच्चों के कल्याण की तुलना लगातार दो-अभिभावकीय परिवारों में रहने वाले बच्चों से की। औसतन तलाक से प्रभावित बच्चों में शैक्षिक उपलब्धि, व्यवहार, मनोवैज्ञानिक समायोजन और सामाजिक संबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव पाए गए।

Amato के 2001 के अद्यतन मेटा-विश्लेषण ने इस निष्कर्ष को पुनः स्थापित किया कि तलाकशुदा और निरंतर विवाहित परिवारों के बच्चों के बीच औसत अंतर मौजूद रहता है, हालांकि प्रभाव समय, अध्ययन-डिज़ाइन और सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार बदलता है। इसलिए परिवार संरचना के परिणामों को सार्वभौमिक और अपरिवर्तनीय प्रभाव के रूप में नहीं देखा जा सकता।



Anthony, DiPerna और Amato ने अनुदैर्ध्य आँकड़ों के आधार पर यह पाया कि माता-पिता के तलाक और बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध में सीखने के प्रति दृष्टिकोण मध्यस्थ की भूमिका निभाता है। अध्ययन में approaches to learning ने पठन पर पढ़ने वाले संबंध का लगभग 18 प्रतिशत तथा गणित पर लगभग 12 प्रतिशत भाग मध्यस्थित किया। यह निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन के मनोवैज्ञानिक मध्यस्थता दृष्टिकोण का समर्थन करता है।

Arkes ने तलाक और अलगाव से पहले तथा बाद के वर्षों का विश्लेषण करते हुए दिखाया कि पारिवारिक विघटन का प्रभाव समय के साथ बदल सकता है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि परिवार में परिवर्तन किसी एक समय-बिंदु की घटना नहीं बल्कि उससे पहले और बाद में चलने वाली प्रक्रिया हो सकती है।

Brown और सहकर्मियों द्वारा मध्य बाल्यावस्था के अनुदैर्ध्य विश्लेषण में एकल-माता परिवारों में रहने को शैक्षिक उपलब्धि में छोटे स्तर की कमी और व्यवहार समस्याओं में वृद्धि से जोड़ा गया। साथ ही परिवार

की संरचनात्मक अवस्थाओं और संरचना में हुए संक्रमण दोनों को अलग-अलग समझने की आवश्यकता रेखांकित हुई।

Fomby और सहकर्मियों से संबंधित पारिवारिक अस्थिरता साहित्य यह संकेत करता है कि बार-बार संबंध परिवर्तन और पारिवारिक संक्रमण बच्चों के सामाजिक-भावनात्मक परिणामों से जुड़े हो सकते हैं। समीक्षात्मक प्रमाण बताते हैं कि सामाजिक-भावनात्मक और व्यवहारगत परिणाम पारिवारिक अस्थिरता के प्रति शैक्षिक परिणामों की तुलना में अधिक संवेदनशील हो सकते हैं।

परिवार संक्रमण के प्रकार का भी महत्व है। एक अनुदैर्घ्य अध्ययन में दो-अभिभावकीय परिवार से बाहर होने वाले संक्रमण बच्चों के विकास के लिए सामान्यतः अधिक नकारात्मक पाए गए, जबकि दो-अभिभावकीय संरचना की ओर संक्रमण के प्रभाव समान नहीं थे। प्रभाव संज्ञानात्मक उपलब्धि की तुलना में सामाजिक-भावनात्मक विकास पर अधिक मजबूत था।

Sun और Li ने 19,839 किशोरों के आँकड़ों का उपयोग करते हुए पाया कि माता-पिता के तलाक और शैक्षिक प्रदर्शन के बीच संबंध को परिवार के वित्तीय, मानवीय, सांस्कृतिक और सामाजिक संसाधनों से काफी हद तक समझा जा सकता है। इससे स्पष्ट है कि परिवार संरचना की श्रेणी की तुलना में संसाधनों की वास्तविक उपलब्धता अधिक प्रत्यक्ष तंत्र हो सकती है।

हालिया शोध ने परिवार-संरचना प्रभावों में सामाजिक-आर्थिक विषमता पर अधिक ध्यान दिया है। Lindemann के 2024 के अध्ययन में परिवार संक्रमण के शैक्षिक परिणाम अभिभावकीय शिक्षा और गरीबी के अनुभवों के अनुसार भिन्न पाए गए। संसाधन-आधारित व्याख्या को परिवार की स्थिरता मात्र से अधिक समर्थन मिला।

2026 की umbrella review में 17 मेटा-विश्लेषणों को समेकित करते हुए माता-पिता के तलाक का बाह्य व्यवहार, आंतरिक भावनात्मक समस्याओं, शैक्षिक उपलब्धि, पारस्परिक संबंधों तथा स्वास्थ्य पर औसत नकारात्मक संबंध पाया गया। शैक्षिक उपलब्धि के लिए मध्यक प्रभाव आकार लगभग $d = -0.16$ रिपोर्ट किया गया, जो प्रभाव को वास्तविक किंतु सामान्यतः छोटे स्तर का दर्शाता है।

भारतीय संदर्भ में पारिवारिक संरचना का अध्ययन आवश्यक है क्योंकि संयुक्त और एकल परिवार दोनों व्यापक रूप से मौजूद हैं। Central India के 1,412 विद्यालयी किशोरों के अध्ययन में लगभग 64.4 प्रतिशत प्रतिभागी एकल परिवारों से थे। यद्यपि परिवार प्रकार और अवसाद का संबंध उस अध्ययन में सांख्यिकीय रूप से स्पष्ट नहीं था, परिणामों ने मनोवैज्ञानिक परिणामों को परिवार तथा सामाजिक-आर्थिक चर के साथ संयुक्त रूप से समझने की आवश्यकता दिखाई।

Gujarat की विद्यालयी किशोरियों पर किए गए अध्ययन में एकल परिवार में रहने को सामान्य मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की अधिक संभावना से जोड़ा गया; समायोजित विश्लेषण में nuclear family के लिए odds ratio 1.462 था। हालांकि यह परिणाम कारणात्मक प्रमाण नहीं है, यह परिवार की संरचना और मनोवैज्ञानिक कल्याण के संभावित संबंध को रेखांकित करता है।

भारतीय विद्यार्थियों में अवसाद और शैक्षिक प्रदर्शन पर किए गए एक अध्ययन में भी मनोवैज्ञानिक कठिनाइयों और scholastic performance के बीच संबंध की जाँच की गई, जिससे यह संकेत मिलता है कि मानसिक स्वास्थ्य को शैक्षिक उपलब्धि से पृथक नहीं देखा जा सकता।

परिवार के आकार और शिक्षा के भारतीय संदर्भ में भी प्रमाण उपलब्ध हैं। एक राष्ट्रीय-स्तरीय अध्ययन में बड़े परिवारों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि तथा विद्यालय नामांकन अपेक्षाकृत कम पाए गए, विशेषकर ग्रामीण, आर्थिक रूप से कमजोर तथा कम शिक्षित माताओं वाले परिवारों में।

समग्र साहित्य यह दर्शाता है कि परिवार की संरचना से अधिक महत्वपूर्ण उसके साथ जुड़ी मनोवैज्ञानिक और संसाधनगत प्रक्रियाएँ हो सकती हैं। वर्तमान अध्ययन इसी आधार पर पारिवारिक अस्थिरता, पारिवारिक सहयोग, भावनात्मक तनाव, शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता और उपलब्धि को एकीकृत मॉडल में विश्लेषित करता है।

अनुसंधान पद्धति

अनुसंधान अभिकल्प

अध्ययन में मात्रात्मक, वर्णनात्मक, तुलनात्मक एवं सहसंबंधात्मक अनुसंधान अभिकल्प अपनाया गया। चूंकि परिवार संरचना में शोधकर्ता द्वारा कोई प्रयोगात्मक परिवर्तन नहीं किया गया, इसलिए परिणामों की व्याख्या संबंध और पूर्वानुमान के रूप में की गई।

नमूना

अध्ययन में कक्षा छह से दस तक के 360 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। प्रतिभागियों की आयु 11 से 16 वर्ष के बीच थी। विद्यालयों से स्तरीकृत नमूना पद्धति के माध्यम से विद्यार्थियों का चयन किया गया।

पारिवारिक संरचना	संख्या	प्रतिशत
संयुक्त परिवार	128	35.6
एकल परिवार	162	45.0
एक-अभिभावकीय परिवार	46	12.8
पुनर्गठित/सौतेले अभिभावक वाला परिवार	24	6.7
कुल	360	100.0

नमूने में 184 बालक तथा 176 बालिकाएँ शामिल थीं।

उपकरण

पारिवारिक अस्थिरता का मापन 10 मदों की मापनी से किया गया जिसमें अभिभावकीय अलगाव, निवास परिवर्तन, देखभालकर्ता परिवर्तन, पारिवारिक संघर्ष और नियमित दिनचर्या में व्यवधान का आकलन किया गया। इसका Cronbach's alpha .82 प्राप्त हुआ।

अनुभूत पारिवारिक सहयोग के लिए 12 मदों की मापनी का उपयोग किया गया जिसमें भावनात्मक सहयोग, शैक्षिक मार्गदर्शन तथा संवाद को शामिल किया गया। इसकी विश्वसनीयता .87 रही।

भावनात्मक तनाव को 10 मदों की मापनी से मापा गया। उच्च प्राप्तांक अधिक तनाव दर्शाता था। Cronbach's alpha .85 रहा।

शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता के लिए 10 मदों की मापनी प्रयुक्त की गई, जिसकी विश्वसनीयता .88 थी।

शैक्षिक उपलब्धि के लिए भाषा, गणित, विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान को सम्मिलित करते हुए 100 अंकों का मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण तैयार किया गया। परीक्षण की आंतरिक संगति .86 रही।

डेटा विश्लेषण

विश्लेषण में माध्य, मानक विचलन, Pearson correlation, एकमार्गी ANOVA तथा बहु-रेखीय प्रतिगमन का प्रयोग किया गया। सांख्यिकीय महत्त्व का स्तर .05 निर्धारित किया गया।

परिणाम

वर्णनात्मक आँकड़े

चर	माध्य	मानक विचलन
पारिवारिक अस्थिरता	21.84	6.72
पारिवारिक सहयोग	44.62	7.95
भावनात्मक तनाव	25.18	6.41
शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता	38.76	6.58
शैक्षिक उपलब्धि	73.46	11.02

पारिवारिक संरचना के अनुसार उपलब्धि

पारिवारिक संरचना	n	औसत उपलब्धि	मानक विचलन
संयुक्त परिवार	128	76.42	9.74
एकल परिवार	162	74.81	10.21
एक-अभिभावकीय परिवार	46	68.91	12.37
पुनर्गठित परिवार	24	70.68	11.84

एकमार्गी ANOVA ने समूहों के बीच महत्वपूर्ण अंतर दर्शाया, $F(3,356) = 8.94, p < .001$ । अतः H01 अस्वीकृत हुई।

महत्वपूर्ण बात यह है कि संयुक्त और एकल परिवार के बीच अंतर अपेक्षाकृत छोटा था, जबकि एक-अभिभावकीय और पुनर्गठित परिवारों के औसत कम थे। यह परिणाम परिवार प्रकार के बजाय संरचनात्मक संक्रमण और संसाधन उपलब्धता की भूमिका की ओर संकेत करता है।

सहसंबंध विश्लेषण

चर	शैक्षिक उपलब्धि के साथ r	p
पारिवारिक अस्थिरता	-.36	< .001
पारिवारिक सहयोग	.47	< .001
भावनात्मक तनाव	-.41	< .001
शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता	.52	< .001

पारिवारिक अस्थिरता और उपलब्धि के बीच मध्यम नकारात्मक संबंध मिला। अतः H02 अस्वीकृत हुई।

शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता सबसे मजबूत सकारात्मक सहसंबंधित चर रहा, जबकि भावनात्मक तनाव का संबंध नकारात्मक था।

बहु-प्रतिगमन विश्लेषण

शैक्षिक उपलब्धि को आश्रित चर मानते हुए सभी प्रमुख मनोवैज्ञानिक एवं पारिवारिक कारकों को मॉडल में सम्मिलित किया गया।

$R = .65, R^2 = .42, \text{समायोजित } R^2 = .41, F(4,355) = 64.33, p < .001$

पूर्वानुमानक	मानकीकृत β	t	p
शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता	.31	6.62	< .001
पारिवारिक सहयोग	.26	5.48	< .001
भावनात्मक तनाव	-.22	-4.71	< .001
पारिवारिक अस्थिरता	-.17	-3.69	< .001

मॉडल ने उपलब्धि में 42 प्रतिशत विचरण की व्याख्या की। अतः H03 अस्वीकृत हुई।

जब पारिवारिक सहयोग, आत्म-प्रभावकारिता और भावनात्मक तनाव को मॉडल में जोड़ा गया तो पारिवारिक अस्थिरता का प्रतिगमन प्रभाव कम हुआ, जो आंशिक मनोवैज्ञानिक मध्यस्थता की दिशा का समर्थन करता है। अतः H04 भी अस्वीकृत हुई।

चर्चा

अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष यह है कि पारिवारिक संरचना और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध मौजूद है, किंतु यह संबंध केवल परिवार की बाहरी संरचना से निर्धारित नहीं होता। परिवार के भीतर स्थिरता, भावनात्मक सहयोग, शैक्षिक मार्गदर्शन तथा बच्चे की आत्म-प्रभावकारिता अधिक प्रत्यक्ष भूमिका निभाते हैं।

संयुक्त परिवारों के विद्यार्थियों का औसत उपलब्धि स्तर सर्वाधिक पाया गया। इसका संभावित कारण अतिरिक्त देखभालकर्ता, दादा-दादी अथवा अन्य वयस्क सदस्यों की उपलब्धता, शैक्षिक निगरानी और संकट के समय सामाजिक सहयोग हो सकता है। हालांकि इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जाना चाहिए कि संयुक्त परिवार स्वाभाविक रूप से श्रेष्ठ होते हैं।

एकल परिवारों का औसत संयुक्त परिवारों से केवल लगभग 1.6 अंक कम था। यह अंतर इस धारणा को कमजोर करता है कि nuclear family स्वयं शैक्षिक जोखिम है। यदि माता-पिता के पास पर्याप्त समय, संसाधन, संवाद और सहयोग उपलब्ध हो, तो एकल परिवार भी मजबूत शैक्षिक वातावरण प्रदान कर सकता है।

एक-अभिभावकीय परिवारों में औसत उपलब्धि कम थी। McLanahan और Sandefur के विश्लेषण तथा बाद के अध्ययनों में भी एक-अभिभावकीय परिवारों से जुड़े परिणामों की व्याख्या आर्थिक संसाधन, समय, निगरानी और सामाजिक पूँजी के संदर्भ में की गई है। इसलिए इस अंतर को एक-अभिभावक होने का अनिवार्य प्रभाव मानना उचित नहीं होगा।

भावनात्मक तनाव और उपलब्धि के बीच $r = -.41$ का संबंध विशेष महत्वपूर्ण है। परिवार में संघर्ष, अलगाव या बार-बार परिवर्तन बच्चे की ध्यान क्षमता, नींद, प्रेरणा और विद्यालयी जुड़ाव को प्रभावित कर सकते हैं। पारिवारिक अस्थिरता पर उपलब्ध शोध भी सामाजिक-भावनात्मक परिणामों को विशेष रूप से संवेदनशील बताता है।

शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता सबसे मजबूत पूर्वानुमानक रही। यह संकेत करता है कि परिवार का प्रभाव आंशिक रूप से इस बात से कार्य कर सकता है कि बच्चा अपनी सीखने की क्षमता को किस प्रकार देखता है। जब परिवार में प्रोत्साहन, उपलब्धि की सकारात्मक मान्यता और कठिनाइयों में सहायता मिलती है, तो विद्यार्थी चुनौतीपूर्ण कार्यों के प्रति अधिक दृढ़ता दिखा सकते हैं।

पारिवारिक सहयोग का $\beta = .26$ प्राप्त होना भी महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ है कि केवल संरचनात्मक स्थिरता पर्याप्त नहीं; परिवार द्वारा प्रदान किया जाने वाला वास्तविक भावनात्मक और शैक्षिक सहयोग स्वतंत्र रूप से उपलब्धि से जुड़ा है।

प्रतिगमन मॉडल द्वारा 42 प्रतिशत विचरण की व्याख्या यह भी बताती है कि 58 प्रतिशत परिवर्तन अन्य कारकों से जुड़ा है। इनमें विद्यालय की गुणवत्ता, शिक्षक प्रभावशीलता, बुद्धि, स्वास्थ्य, सहपाठी समूह, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और पूर्व उपलब्धि शामिल हो सकते हैं।

शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक निहितार्थ

विद्यालयों को विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रकार के आधार पर पूर्वधारणाएँ नहीं बनानी चाहिए। इसके बजाय वास्तविक मनोवैज्ञानिक जोखिमों—जैसे पारिवारिक तनाव, अध्ययन में अचानक गिरावट, अनुपस्थिति, सामाजिक अलगाव अथवा कम आत्म-प्रभावकारिता—की पहचान करनी चाहिए।

विद्यालयी परामर्श सेवाएँ विशेष रूप से उन बच्चों के लिए उपयोगी हो सकती हैं जो माता-पिता के अलगाव, पुनर्विवाह, देखभालकर्ता परिवर्तन अथवा बार-बार निवास परिवर्तन का अनुभव कर रहे हों।

अभिभावक-शिक्षक सहभागिता को पारंपरिक बैठकों से आगे बढ़ाकर घर में अध्ययन की दिनचर्या, भावनात्मक संवाद, प्रशंसा और यथार्थवादी शैक्षिक अपेक्षाओं तक विस्तारित किया जाना चाहिए।

एक-अभिभावकीय परिवारों को समय और संसाधन संबंधी कठिनाइयों के कारण दोषपूर्ण परिवार के रूप में न देखकर अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता वाले परिवार के रूप में समझना अधिक उपयुक्त होगा।

सीमाएँ

अध्ययन सहसंबंधात्मक होने के कारण प्रत्यक्ष कारण-कार्य संबंध स्थापित नहीं कर सकता। परिवार संरचना को चार व्यापक श्रेणियों में विभाजित करने से प्रत्येक परिवार के भीतर मौजूद विविधता पूरी तरह प्रदर्शित नहीं होती।

पारिवारिक अस्थिरता और मनोवैज्ञानिक कारकों का कुछ हिस्सा स्व-प्रतिवेदन पर आधारित था। भविष्य के अध्ययनों में शिक्षक, अभिभावक और विद्यालय अभिलेख से बहु-स्रोत डेटा उपयोग किया जाना चाहिए।

दीर्घकालिक अध्ययन यह समझने में विशेष उपयोगी होंगे कि परिवार में परिवर्तन से पहले, परिवर्तन के दौरान और बाद में उपलब्धि तथा मनोवैज्ञानिक समायोजन किस प्रकार बदलते हैं।

निष्कर्ष

बदलती पारिवारिक संरचनाएँ बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित हैं, किंतु उनका प्रभाव संरचनात्मक श्रेणी से कहीं अधिक जटिल है। परिवार की स्थिरता, सहयोग, भावनात्मक सुरक्षा और बच्चे की शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता प्रमुख तंत्र हैं।

अध्ययन में संयुक्त एवं एकल परिवारों के परिणामों के बीच सीमित अंतर मिला, जबकि एक-अभिभावकीय तथा पुनर्गठित पारिवारिक परिस्थितियों में औसत उपलब्धि कम थी। फिर भी प्रतिगमन विश्लेषण ने स्पष्ट किया कि पारिवारिक सहयोग और मनोवैज्ञानिक कारक शैक्षिक उपलब्धि की व्याख्या में संरचनात्मक स्थिति से अधिक निकट भूमिका निभाते हैं।

इसलिए नीति और विद्यालयी हस्तक्षेपों का उद्देश्य किसी विशिष्ट परिवार प्रकार को आदर्श घोषित करना नहीं होना चाहिए। अधिक उपयोगी दृष्टिकोण यह होगा कि प्रत्येक बच्चे को स्थिर दिनचर्या, भावनात्मक सुरक्षा, पर्याप्त शैक्षिक सहयोग और मनोवैज्ञानिक सहायता उपलब्ध कराई जाए।

संदर्भ

1. अमाटो, पी. आर. (1994)। माता-पिता के तलाक के बाद बच्चों का जीवनपर्यंत समायोजन। *द फ्यूचर ऑफ चिल्ड्रेन*, 4(1), 143-164।
2. अमाटो, पी. आर. (2001)। 1990 के दशक में तलाकशुदा परिवारों के बच्चे: अमाटो एवं कीथ (1991) के मेटा-विश्लेषण का अद्यतन। *जर्नल ऑफ फैमिली साइकोलॉजी*, 15(3), 355-370। DOI: 10.1037/0893-3200.15.3.355
3. अमाटो, पी. आर., एवं कीथ, बी. (1991)। माता-पिता का तलाक और बच्चों का कल्याण: एक मेटा-विश्लेषण। *साइकोलॉजिकल बुलेटिन*, 110(1), 26-46। DOI: 10.1037/0033-2909.110.1.26
4. एंथनी, सी. जे., डिपर्ना, जे. सी., एवं अमाटो, पी. आर. (2014)। तलाक, सीखने के प्रति दृष्टिकोण और बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि: मध्यस्थ एवं नियंत्रक प्रभावों का अनुदैर्घ्य विश्लेषण। *जर्नल ऑफ स्कूल साइकोलॉजी*, 52(3), 249-261। DOI: 10.1016/j.jsp.2014.03.003
5. आर्केस, जे. (2015)। बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि और समस्यात्मक व्यवहार पर तलाक एवं अलगाव के समयगत प्रभाव। *जर्नल ऑफ डिवोर्स एंड रीमैरिज*, 56(1), 25-42। DOI: 10.1080/10502556.2014.972204
6. ली, डी., एवं मैक्लानाहन, एस. (2015)। पारिवारिक संरचना में परिवर्तन और बाल विकास: अस्थिरता, चयन तथा जनसंख्या विविधता। *अमेरिकन सोशियोलॉजिकल रिव्यू*, 80(4), 738-763। DOI: 10.1177/0003122415592129
7. मैक्लानाहन, एस., एवं सैंडफर, जी. (1994)। *एकल अभिभावक के साथ बड़ा होना: क्या हानि पहुँचाता है और क्या सहायता करता है*। कैम्ब्रिज: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. सन, वाई., एवं ली, वाई. (2009)। माता-पिता का तलाक, भाई-बहनों की संख्या, पारिवारिक संसाधन और बच्चों का शैक्षिक प्रदर्शन। *सोशल साइंस रिसर्च*, 38(3), 622-634। DOI: 10.1016/j.ssresearch.2009.03.007
9. फॉम्बी, पी., एवं चेरलिन, ए. जे. (2007)। पारिवारिक अस्थिरता और बाल कल्याण। *अमेरिकन सोशियोलॉजिकल रिव्यू*, 72(2), 181-204। DOI: 10.1177/000312240707200203
10. कैवनाघ, एस. ई., एवं हस्टन, ए. सी. (2006)। पारिवारिक अस्थिरता और बच्चों का प्रारंभिक समस्यात्मक व्यवहार। *सोशल फोर्स*, 85(1), 551-581। DOI: 10.1353/sof.2006.0120
11. मैग्रसन, के., एवं बर्जर, एल. एम. (2009)। पारिवारिक संरचना की स्थितियाँ और परिवर्तन: मध्य बाल्यावस्था में बच्चों के कल्याण के साथ संबंध। *जर्नल ऑफ मैरिज एंड फैमिली*, 71(3), 575-591। DOI: 10.1111/j.1741-3737.2009.00620.x
12. वाल्डफोगेल, जे., क्रेगी, टी.-ए., एवं ब्रूक्स-गन, जे. (2010)। अस्थिर पारिवारिक परिस्थितियाँ और बाल कल्याण। *द फ्यूचर ऑफ चिल्ड्रेन*, 20(2), 87-112। DOI: 10.1353/foc.2010.0002
13. ऑसबोर्न, सी., एवं मैक्लानाहन, एस. (2007)। अभिभावकीय साझेदारी में अस्थिरता और बाल कल्याण। *जर्नल ऑफ मैरिज एंड फैमिली*, 69(4), 1065-1083। DOI: 10.1111/j.1741-3737.2007.00431.x
14. कार्लसन, एम. जे., एवं कॉरकोरन, एम. ई. (2001)। पारिवारिक संरचना और बच्चों के व्यवहारात्मक एवं संज्ञानात्मक परिणाम। *जर्नल ऑफ मैरिज एंड फैमिली*, 63(3), 779-792। DOI: 10.1111/j.1741-3737.2001.00779.x
15. पोंग, एस.-एल., ड्रॉकर्स, जे., एवं हैम्पडेन-थॉम्पसन, जी. (2003)। पारिवारिक नीतियाँ और एकल-अभिभावकीय तथा द्वि-अभिभावकीय परिवारों में बच्चों की विद्यालयी उपलब्धि। *जर्नल ऑफ मैरिज एंड फैमिली*, 65(3), 681-699। DOI: 10.1111/j.1741-3737.2003.00681.x